महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठलम् (कैथल)-१३६०२७, हरियाणा
(हरियाणासर्वकाराधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापितः)

परिचायिका

Prospectus

2022-23

वर्तमानपरिसर– डॉ. बी. आर. अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, जगदीशपुरा, अम्बाला रोड़, कैथल-136027

सम्पर्कसूत्रम् – 93500-45366, वेबसाईट- www.mvsu.ac.in

mvsumktl@gmail.com

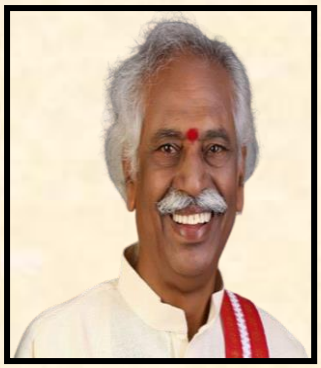

कुलाधिपति-सन्देशः

अत्यन्तमेवाह्लादकरो गौरवास्पदश्चायं विषयो वर्तते यद् हरियाणासर्वकारः संस्कृतभाषायास्संरक्षणे संवर्द्धने च कृतसंकल्पो दरीदृश्यते । संकल्पस्यास्य सम्पूर्त्तये च हरियाणासर्वकारेण 2018 तमे ईस्वीये वर्षे कपिष्ठलनगरे (कैथल) मून्दड़ीनामके ग्रामे महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य स्थापना विहिता । विश्वविद्यालयोऽसौ ज्ञानविज्ञानयोः संरक्षणाय, संवर्द्धनाय संस्कृतभाषाप्रचारप्रसारार्थञ्च कृतसंकल्पो भूत्वा न केवलं हरियाणाप्रदेशम् अपितु सम्पूर्णमेव भारतराष्ट्रं गौरवान्वितं विधास्यति । ऐतिहासिके कपिष्ठलनगरे (कैथल) संस्कृतविश्वविद्यालयस्य स्थापनायै कैथलनगरस्य समस्तजनताभ्यो हार्दिकानि वर्धापनानि ।

विश्वविद्यालयोऽयमुत्तरोत्तरं प्रगतिमार्गे अग्रेसरो भूत्वा स्वीयविशिष्टस्योद्देश्यस्य सम्पूर्त्तौ सुसफलो भवेदेतदर्थं समस्तविश्वविद्यालयकुटुम्बेभ्योऽशेषशुभकामाः ।

महामहिम बंडारूदत्तात्रेयः
कुलाधिपतिः

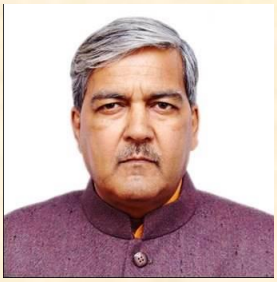

कुलपति-सन्देशः

संस्कृतभाषा भारतस्य आत्मतत्त्वरूपेण भारतीयसंस्कृतेः संरक्षिका संवर्धिका च वर्तते । संस्कृतं विना पूर्णाखण्डभारतस्य कल्पनापि गगनकुसुमसदृशी असम्भवा वर्तते । अत एव उक्तमस्ति- **"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा"** अर्थात् भारतस्य प्रतिष्ठा संस्कृतेन संस्कृत्या एव जायतेऽत्र नास्ति सन्देहलेश: । अस्य सर्वजनवन्दितस्य भारतस्य आधारस्तम्भः संस्कृतमेव वर्तते नान्यत् । अतः भारतस्य सर्वविधस्य सम्पूर्णस्येतिवृत्तस्य ज्ञानं संस्कृतेन संस्कृतशास्त्रेणैव च भवितुमर्हति ।

भारतीयवैदिकसभ्यतायाः भारतीयसंस्कृतेश्च विकासः सरस्वतीनद्यास्तटे एवाभूद् । अतः ऐतिहासिकदृष्ट्या हरियाणाप्रदेशस्तथा प्रदेशस्यास्य कपिष्ठलनगरमतीव महत्वपूर्णं स्थानं विभर्ति । इयमेव प्रागैतिहासिकऋषेः कपिलस्य तपोभूमिः वर्तते । भारतीयसंस्कृतेः त्रय: कालखण्डा: स्वीक्रियन्ते, प्रथमो भारतीयवैदिककालखण्ड:, द्वितीयो रामायणकालखण्ड: तृतीयश्च महाभारतकालखण्डः। अनेन खण्डत्रयेणापि अस्य कपिष्ठलस्य साक्षात्सबन्धो वर्तते । वैदिककालखण्डे वैदिकसभ्यतायामस्य कपिष्ठलस्य वर्णनमवाप्यते, अपि च कृष्णयजुर्वेदे कठ-कपिष्ठलशाखापि प्राप्यते । रामायणकालस्य चर्चा क्रियेत चेत् लवकुशजन्मना सह अस्य कपिष्ठलस्य साक्षात्सम्बन्धो दृश्यते । अत्रैव लवकुशतीर्थनामकं धार्मिकस्थलमद्यापि वर्तते । महाभारतकालेन अस्य सम्बन्धः सर्वविदितो वर्तते । अस्मिन्नेव कुरुक्षेत्रे अभूतपूर्वमहाभारतयुद्धो जात आसीत् । अष्टचत्वारिंशत्क्रोशात्मकक्षेत्रोऽयं कुरुक्षेत्रनाम्ना प्रथितो वर्तते । अत्रैव भगवान् हनुमान् अर्जुनरथध्वजस्थो जातः । अतो भारतीयसंस्कृतौ कपिष्ठलनामकस्यास्य विशिष्टस्य स्थलस्य अभूतपूर्वं स्थानं वर्तते । इत्येव सर्वं मनसि निधाय हरियाणासर्वकारेण संस्कृतस्य संस्कृतेश्च रक्षणाय प्रथमतया प्रदेशेऽस्मिन् महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य स्थापना 2018 तमे ईस्वीये वर्षे विहिता । अयञ्च संस्कृतविश्वविद्यालयः अत्यन्तमेवाल्पीयसा कालेन आभारते सुप्रथितो भूत्वा समेषां ज्ञानपिपासूनामाकर्षणकेन्द्रभूतो जातो वर्ततेऽति निश्चप्रचम्। निरन्तरमेव संस्कृतस्य प्रचारे-प्रसारे संलग्नोऽयं विश्वविद्यालयो द्रुतगत्या स्वलक्ष्यं प्रत्यग्रेसरन् विद्यतेऽति दृष्ट्वा मनसि महान्प्रमोदो जायते । अस्मिन्न केवलं वेदोपनिषद्-रामायण-महाभारत-दर्शन-पुराण-धर्मशास्त्रादिप्राचीनानां शास्त्राणामध्यापनेन प्राचीनभारतीयज्ञानन्यासभण्डागारस्य रक्षणमेव क्रियते अपितु-योग आयुर्वेद संगणक-जीवनप्रबन्धन-पत्रकारितादि-आधुनिकविषयाणामध्यापनेन, नितनवनवानुसन्धानेन, व्यवसायोन्मुखपाठ्यक्रममाध्यमेन च भारतीयसमस्तयुवकानां कृते आत्मनिर्भरतां प्रति प्रेरणमपि विधीयते ।

इत्थमेव विश्वविद्यालयोऽयं सततं भारतीयसंस्कृतेस्संस्कृतस्य च प्रचारं, प्रसारं, संरक्षणं, संवर्धनञ्च कुर्वन् भारतीयज्ञानविज्ञानपरम्परायाः शोधस्थलरूपेण प्रशिक्षणसंस्थानरूपेण न केवलं हरियाणाप्रदेशस्यापितु सम्पूर्णभारतस्य सांस्कृतिकमार्गदर्शनं कुर्वाणस्सदैव संवर्धतां देदिव्यतामिति कामयेऽहम् ।

प्रो० रमेशचन्द्रभारद्वाजः
कुलपतिः

विषय-सूची

क्रम	विषय
1	परिचय (Introduction)
2	उद्देश्य (Purposes of the University)
3	दृष्टि (Vision)
4	ध्येय (Mission)
5	संकाय एवं विभाग (Faculty and Department)
6	पाठ्यक्रमानुसार शुल्क विवरण
7	प्रवेश प्रक्रिया (Admission)
8	पाठ्यक्रम की अर्हता
9	शोध एवं प्रकाशन विभाग
10	राष्ट्रीय क्रैडिट कोर (N.C.C)
11	राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग (NSS)
12	IQAC आन्तरिक गुणवत्ता प्रत्यायन परिषद् (Internal Quality Assurance Cell)
13	निगरानी परिषद् (Vigilance Cell)
14	युवा कल्याण विभाग (Department of Youth Welfare)
15	क्रीडा निदेशालय (Directorate of Sports)
16	अन्तर्जालीय प्रकल्प (Web Portal)
17	ई पत्रिका (E-Magazine)
18	क्रीडा (Sports)
19	सांस्कृतिक गतिविधियाँ (Cultural Activities)
20	स्वास्थ्य केन्द्र (Health Centre)
21	विकास तथा उपलब्धियाँ (Developments and Achievements)
22	शैक्षणिक कैलेण्डर
23	छात्रवृत्ति* (Scholarship)
24	पुस्तकालय (Library)
25	प्रयोगशाला सुविधा
26	छात्रावास (Hostel)
27	संस्कृत संभाषण
28	शैक्षणिक एवं प्रशासनिक अधिकारी एवं विभागाध्यक्ष

1. परिचय (Introduction)

भारत के समृद्ध हरियाणा राज्य में कैथल जिले के मून्दडी गाँव में हरियाणा सरकार के अधिनियम 20/2018 द्वारा 2018 में **"महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, मौनधारा (मून्दडी), कैथल (कपिष्ठल)"** स्थापित है । यह संस्कृतभाषा के संरक्षण, प्रचार-प्रसार तथा विकास हेतु कार्यरत हरियाणा का मात्र एक संस्कृत विश्वविद्यालय है।

2. उद्देश्य (Purposes of the University)

संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य संस्कृत विद्या का आधुनिक दृष्टिकोण के सापेक्ष पारम्परिक संस्कृत विद्या का प्रचार-प्रसार, संरक्षण एवं प्रोत्साहन के साथ-साथ उनका पालन करते हुए :-

i) संस्कृत विद्या की सभी विधाओं में अनुसन्धान, अनुदान, प्रोत्साहन तथा संयोजन करना है, साथ ही शिक्षक-प्रशिक्षण तथा पाण्डुलिपि विज्ञान आदि को भी संरक्षण देना, जिससे पाठमूलक प्रासंगिक विषयों में आधुनिक शोध के निष्कर्ष के साथ सम्बन्ध स्पष्ट किया जा सके तथा इनका प्रकाशन हो सके।

ii) देश के विविध भागों में परिसरों की स्थापना, विद्यापीठों का अधिग्रहण तथा संचालन करना और समान उद्देश्यों वाली अन्य संस्थाओं को विश्वविद्यालय से सम्बद्ध करना।

iii) संस्कृत के संवर्धनार्थ राज्य सरकार के उपक्रम के रूप में उनकी नीतियों एवं योजनाओं को लागू करना।

iv) शोध एवं ज्ञान के प्रसार एवं विकास के लिए समुचित मार्गदर्शन एवं व्यवस्था करना।

v) प्राचीन-नवीन अध्ययन एवं विस्तारित योजनाएँ जो समाज के विकास में योगदान देती हों, उनका उत्तरदायित्व लेना।

vi) इसके अतिरिक्त उन सभी उत्तरदायित्वों एवं कार्यों का निष्पादन करना जो इस संस्कृत विश्वविद्यालय के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक या वाञ्छित हों।

vii) पालि एवं प्राकृत भाषाओं का संरक्षण एवं संवर्धन करना।

3. दृष्टि (Vision)

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत शिक्षा की गरिमा की संस्थापना के लिए महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, मौनधारा (मून्दडी),कपिष्ठलम् (कैथल) का विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय के रूप में विकास ।

4 ध्येय (Mission)

1. संस्कृत विद्या की समग्र शाखाओं का सर्वाङ्गीण विकास तथा आधुनिक प्रणालियों के द्वारा संस्कृत संसाधनों की उपलब्धि।
2. संस्कृत, पालि एवं प्राकृत भाषाओं में इन भाषाओं के परस्पर सांस्कृतिक अन्त:सम्बन्धों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षण व अनुसन्धान की व्यवस्था करते हुए भाषिक विविधता तथा सांस्कृतिक बहुलता का उन्नयन।
3. संस्कृत के साथ –साथ इन भाषाओं की ज्ञान प्रणालियों में दार्शनिक एवं वैज्ञानिक तत्त्वों का संरक्षण एवं समुन्नयन तथा इन ज्ञान प्रणालियों का सांस्कृतिक धरोहर के साथ सम्बन्ध स्थापित करते हुए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से इनकी उपलब्धता सुनिश्चित करना।

5 संकाय एवं विभाग (Faculty and Department)

	संकाय	विभाग	शास्त्री	आचार्य	डिप्लोमा
1.	**वेद-वेदाङ्गसंकाय**	वेद	वेद	वेद	वेद
		ज्योतिष	ज्योतिष	ज्योतिष	ज्योतिष
		व्याकरण	व्याकरण	व्याकरण	कर्मकाण्ड
		धर्मशास्त्र	धर्मशास्त्र	धर्मशास्त्र	वैदिक गणित
		-	-	-	आयुर्वेद
					वास्तु
2.	**साहित्य-संस्कृति संकाय**	साहित्य	साहित्य	साहित्य	संस्कृत भाषा दक्षता
					-
		हिन्दू अध्ययन	-	हिन्दू अध्ययन	-
					-
3.	**दर्शन संकाय**	दर्शन	दर्शन	दर्शन	-
		योग	योग	योग	योग
4.	**सामाजिक विज्ञान संकाय**	-	हिन्दी	-	-
		-	अंग्रेजी	-	-
		-	इतिहास	-	-
		-	राजनीति	-	

नोट-: विश्वविद्यालय किसी भी पाठ्यक्रम में कम से कम 10 छात्र होने पर ही सम्बन्धित पाठ्यक्रम संचालित किया जा सकता है। पाठ्यक्रम संचालित न होने पर नामांकित छात्र का शुल्क वापिस किया जाएगा।

6 पाठ्यक्रम (Course)

पाठ्यक्रम	योग्यता	अवधि
शास्त्री (B.A.)	10+2/समकक्ष	चारवर्षीय
आचार्य (M.A.)	शास्त्री/B.A./ समकक्ष	द्विवर्षीय
डिप्लोमा (योग)	10+2/समकक्ष	एक वर्षीय
डिप्लोमा (आयुर्वेद)	10+2/समकक्ष	द्वि-वर्षीय

पाठ्यक्रमानुसार शुल्क विवरण

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय परिसर में प्रवेश स्वीकृत होने पर प्रत्येक छात्र को निम्नलिखित शुल्क एवं सुरक्षित धनराशि (रुपये में) पूरे सत्र के लिए आरम्भ में ही जमा करानी होगी।

परिचायिका शुल्क = रु. 200/-

(परिचायिका का मुद्रण प्रति यदि चाहते हो तो)

शैक्षिक पाठ्यक्रमों का शुल्क

क्र. सं.	विवरण	शास्त्री	आचार्य	डिप्लोमा (एक वर्षीय)	डिप्लोमा (द्वि-वर्षीय)
1.	प्रवेश आवेदन पत्र	200	200	200	200
2.	प्रवेश-शुल्क	50	50	50	50
3.	सुरक्षित धन (पुस्तकालय हेतु)	200	300	200	200
4.	नामांकन शुल्क	50	50	50	50
5.	परिचय-पत्र	50	50	50	50
6.	पत्रिका-शुल्क*	70	100	70	70
7.	क्रीड़ा-शुल्क	100	100	100	100
8.	छात्रकोष-शुल्क	300	300	300	300
9.	विविध प्रवृत्ति शुल्क	200	200	200	200
10.	कला/कृति शुल्क	50	50	50	50
11.	परीक्षा-शुल्क	400	400	400	400
12.	विकास शुल्क	500	500	500	500
13.	रजिस्ट्रेशन शुल्क	150	150	150	150
14.	रेड क्रॉस	80	80	80	80
15.	राष्ट्रीय सेवा योजना	50	50	50	50
16.	पत्राचार शुल्क	50	50	50	50
17.	पाठ्यक्रम शुल्क	50	50	50	50
18.	शिक्षा शुल्क	100	100	1600	4600
19.	संगणक शुल्क	50	50	50	50
20.	प्रायोगिक शुल्क	-	-	2000	3000
	योग	**रु. 2700/-**	**रु. 2830/-**	**रु. 6200/-**	**रु. 10,200/-**

* छात्रों के आलेख, कविता, निबन्ध आदि विश्वविद्यालय परिसर से प्रकाशित किए जाएंगे।

7 प्रवेश प्रक्रिया (Admission)

विश्वविद्यालय में अध्यापन व्यवस्था –

विश्वविद्यालय निम्नलिखित परीक्षाओं के पाठ्यक्रम की अध्यापन व्यवस्था करता है जिनकी राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त है।

क्रम	परीक्षा नाम	समकक्षता
1.	डिप्लोमा अंशकालिक पाठ्यक्रम	बाहरवीं/समकक्ष
2.	शास्त्री चारवर्षीय पाठ्यक्रम/8 सत्रार्द्ध	बी.ए./समकक्ष
3.	आचार्य द्विवर्षीय पाठ्यक्रम / 4 सत्रार्द्ध	एम.ए./समकक्ष

प्रवेशार्थ नियम एवं पंजीकरण का निरस्तीकरण

1. एक शैक्षणिक-वर्ष में किसी एक नियमित पाठ्यक्रमके साथ एक डिप्लोमा पाठ्यक्रम में भी अपनी पात्रता के अनुसार प्रवेश पा सकता है।
2. विश्वविद्यालय के प्रत्येक पाठ्यक्रम में निर्धारित-अर्हता में कोई छूट नहीं दी जाएगी।
3. यदि किसी विषय में छात्रों की संख्या अधिक है, तो छात्र की रुचि के अनुसार अन्य-विषय में स्थान उपलब्ध होने पर प्रवेश की अनुशंसा की जाएगी।
4. प्रवेश-परीक्षा में वे अभ्यर्थी भी भाग ले सकते हैं, जिन्होंने अपनी अर्हता परीक्षा उत्तीर्ण की हो या इस परीक्षा का परिणाम अवशिष्ट हो। अर्हता-परीक्षा-परिणाम न आने पर या अनुत्तीर्ण होने की स्थिति में सम्बन्धित छात्र/छात्रा का प्रवेश स्वतः निरस्त समझा जाएगा।
5. शास्त्री, आचार्य, में प्रवेश घोषित-कार्यक्रमानुसार निश्चित होगा, जिसे प्रवेश-सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण तिथियों के कॉलम में उद्धृत किया जाएगा।
6. पाठ्यक्रमों में प्रत्येक विभाग में सीटें-आचार्य-30, शास्त्री-35, डिप्लोमा-50 निर्धारित हैं ।

विशेष

i. पूर्व-उत्तीर्ण-परीक्षाओं की उत्तीर्णता के विषय में विश्वविद्यालय अथवा मान्यता प्राप्त संस्था से प्रमाणपत्र।

ii. जन्मतिथि-प्रमाणपत्र (दसवीं या तत्सम्बन्धी परीक्षा का प्रमाणपत्र, जिसमें जन्मतिथि का उल्लेख हो)

iii. चरित्र-प्रमाणपत्र (पूर्व-संस्था के प्रधानाचार्य द्वारा) (अंशकालिक-पाठ्यक्रम के प्रवेशार्थी राजपत्रित अधिकारी/संस्था-प्रमुख जहाँ अभ्यर्थी ने अध्ययन किया हो, के द्वारा) ।

iv. मूल-निवास-प्रमाणपत्र ।

v. विश्वविद्यालय के नियमानुसार मूल-स्थानान्तरण-प्रमाणपत्र (टी.सी.)/प्रव्रजन-प्रमाणपत्र (माइग्रेशन सर्टिफिकेट)/ अंक-तालिकाएं (मार्कशीट) निर्धारित समयावधि में अनिवार्यरूप से नामांकन शाखा(प्रवेश –प्रकोष्ठ) - में जमा करवानी होंगी, अन्यथा प्रवेश निरस्त किया जाएगा ।

vi. क्रीडा सम्बन्धी-प्रमाणपत्र (राष्ट्रिय-अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेने का प्रमाणपत्र यदि कोई हो तो)

vii. प्रमाणपत्र (यदि प्रवेशार्थी आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग (EWS), अनुसूचित-जाति, जनजाति एवं नॉन-क्रिमीलेयर-सम्बन्धी पिछड़ी जाति, अल्पसंख्यक-वर्ग या विकलांग कोटे का हो) तो नगर मजिस्ट्रेट/ सब डिविजनल मजिस्ट्रेट/तहसीलदार या निर्धारित अधिकारी द्वारा प्रमाणित होना चाहिए। विकलांग अभ्यर्थियों के लिए मुख्य स्वास्थ्य-अधिकारी, राजकीय चिकित्सालय द्वारा प्रमाणित होना चाहिए। (न्यूनतम 40 प्रतिशत विकलांगता पर ही विचार किया जाएगा)

viii. शास्त्री प्रथमवर्ष में प्रवेश लेने वाले छात्र/छात्रा 15 दिन की समयावधि में ही विषय-परिवर्तन कर सकता/सकती है। विषय परिवर्तन करने हेतु सम्बन्धित-विषयों के विभागाध्यक्ष एवं संकाय-प्रमुख के माध्यम से आवेदनपत्र संस्तुत करवाकर शैक्षणिक-विभाग में जमा करवाना होगा।

ix. 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' के निर्देशानुसार विभिन्न-पाठ्यक्रमों में प्रविष्ट सभी अभ्यार्थियों को अपने आधार-कार्ड एवं बैंक-खाते से सम्बन्धित-दस्तावेज की प्रतिलिपि प्रवेश-आवेदन पत्र के साथ संलग्न करना अनिवार्य है। प्रत्येक अभ्यर्थी को आवेदन पत्र के साथ अपना एक अतिरिक्त नवीन छायाचित्र (फोटोग्राफ) संलग्न करना अनिवार्य है ।

x. योग के छात्रों को योग-वेशभूषा एवं यौगिक-सामग्री का व्यय-निर्वहन स्वयं करना होगा ।

xi. किसी भी छात्र के विरुद्ध अनुशासनहीनता, अमर्यादित-आचरण, रैगिंग-सम्बन्धी-अपराध, दुर्व्यवहार आदि की शिकायत प्राप्त होने पर अनुशासन-समिति की अनुशंसा के आधार पर कुलपति द्वारा छात्र का पंजीकरण नियमानुसार निरस्त किया जा सकता है ।

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

पञ्जीकरण आरम्भ

आचार्य (एम.ए.)

व्याकरण	–	ज्योतिष
साहित्य	–	दर्शन
वेद	–	योग
हिन्दू अध्ययन	–	धर्मशास्त्र

शास्त्री (बी.ए.) चार वर्षीय (NEP 2020)

व्याकरण	–	ज्योतिष
साहित्य	–	दर्शन
वेद	–	योग
धर्मशास्त्र		

अंशकालीन पाठ्यक्रम (डिप्लोमा)

- ✓ योग
- ✓ आयुर्वेद
- ✓ ज्योतिष
- ✓ वास्तुशास्त्र
- ✓ संस्कृत भाषा दक्षता
- ✓ वैदिक-गणित
- ✓ वेद
- ✓ कर्मकाण्ड (पौरोहित्य)

विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लाभ-

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत स्नातक पाठ्यक्रम
- रोजगार परक पाठ्यक्रमों का समावेश
- संस्कृत विषयों के साथ आधुनिक विषयों का अध्ययन।
- हिन्दी व अंग्रेजी विषय अनिवार्य रूप में।
- राजनीति, इतिहास वैकल्पिक विषय।
- शास्त्री करके प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में बैठनें (I.A.S., I.P.S) का सुनहरा अवसर
- भारतीय सेना में R.T. (J.C.O) बनने का सुनहरा अवसर।
- चिकित्सा (आयुर्वेद डिप्लोमा)
- संचार (सूचना-तकनीक)

विशेष –
विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राओं के लिए छात्रावास की व्यवस्था उपलब्ध है।

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करेः-

वेबसाइटः- www.mvsu.ac.in संपर्क-सूत्र- 93500-45366

प्रवेश हेतु नीचे दिए गए पते पर सम्पर्क करें

कार्यालय परिसर- डॉ भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय

जगदीशपुरा (अम्बाला रोड़, कैथल-136027)

डिप्लोमा

आयुर्वेद (द्विवर्षीय)
शुल्क 10,000/- (प्रति वर्ष)

अन्य डिप्लोमा (एकवर्षीय)
शुल्क 6,000/-

8 पाठ्यक्रम की अर्हता

शास्त्री (बी.ए.)

शास्त्री पाठ्यक्रम में प्रवेशार्थ नियम :

शास्त्री पाठ्यक्रम हेतु परिसर में प्रवेश के लिये विश्वविद्यालय द्वारा प्रवेश-परीक्षा आयोजित की जायेगी, जिसमें सम्मिलित होने के लिए निम्नलिखित परीक्षाओं में से किसी एक में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है –

1. उत्तर मध्यमा/प्राक्शास्त्री/विशारद/10+2(बाहरवीं)
2. अथवा मान्यता प्राप्त किसी संस्कृत विश्वविद्यालय या संस्कृत परिषद् से परम्परागत प्रणाली से उत्तीर्ण की गई उच्चत्तर माध्यमिक या समकक्ष परीक्षा ।
3. महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन की वेदविभूषण परीक्षा ।
4. शास्त्री पाठ्यक्रमों में प्रवेशार्थ चुने गये भाषा/आधुनिक विषय, उत्तरमध्यमा/(बाहरवीं कक्षा) तक पढ़े हुए होने चाहिए ।

शास्त्री का पाठ्यक्रम :

शास्त्री परीक्षा चतुरवर्षीय वार्षिक/8 सेमेस्टर में सम्पन्न होगी । जो 186 क्रेडिट की होगी ।

मुख्यविषय : (अधोलिखित में से कोई एक)

वेद/ व्याकरण/ साहित्य/ दर्शन/ योग/ ज्योतिष/धर्मशास्त्र

1. शास्त्री (SHASTRI)/(बी.ए.) का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम प्रश्नपत्रों के साथ 186 क्रेडिट का होगा । मूल्याङ्कन के 80 अङ्क एवं आन्तरिक – मूल्याङ्कन 20 अङ्क का होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन चार भागों में विभक्त होगा, यथा-

1.	आन्तरिक परीक्षण /प्रदत्त नियत कार्य (Internal test/Assignment)	-	05
2.	शास्त्र सम्बद्ध संगोष्ठी/शास्त्र परिचर्चा (Shastriya Paricharcha (seminar/symposia)	-	05
3.	शिक्षण स्रोत सामग्री का संचयन एवं प्रबन्धन (Learning Resource Maintenance)	-	05
4.	उपस्थिति (Attendance) 75% = 01 अङ्क, 76% से 80% = 02अङ्क, 81% से 85% = 03 अङ्क, 86% से 90% = 04 अङ्क, 91% से अधिक = 05 अङ्क देय होंगे।	-	05
	कुल योग –	-	20 अङ्क

आचार्य (एम.ए.)

आचार्य कक्षा में प्रवेश के लिए निम्नलिखित परीक्षायें मान्य होंगी :-

शास्त्री : संस्कृत विश्वविद्यालय/संस्कृत महाविद्यालय या मान्यता प्राप्त संस्था।
शिरोमणि : मद्रास विश्वविद्यालय, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,तिरुपति।
विद्वद् मध्यमा : कर्नाटक सरकार, बैंगलुरु
शास्त्रभूषण : (प्रीलिमिनरी) केरल सरकार, त्रिवेन्द्रम्।
विद्या प्रवीण : आन्ध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर
बी.ए. : मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय/महाविद्यालय से।

: (संस्कृत माध्यम से शास्त्री/B.A को वरीयता दी जाएगी)

प्रथमपत्रम् : अनिवार्य पत्र (सभी के लिए)

मूलविषय : अधोलिखित -

व्याकरण	साहित्य	ज्योतिष	धर्मशास्त्र
वेद	दर्शन	योग	हिन्दू अध्ययन

विशेष नियम :

- जिन आवेदकों ने बी.ए. (संस्कृत)/आचार्य/एम.ए, अथवा वेदालंकार/विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की है, वे आचार्य/एम. ए. स्तर पर साहित्य/धर्मशास्त्र/दर्शन/ज्योतिष/वेद/योग/हिन्दू-अध्ययन व व्याकरण विषय ले सकते है।
- आचार्यः (M.A.) कक्षा षाण्मासिकी परीक्षा प्रणाली के अनुसार दो वर्षात्मक होगा जिसमें षाण्मासिक चार सत्र होंगे
- सत्र 2021-22 से विश्वविद्यालय द्वारा हिन्दू-अध्ययन शिक्षा विषय में स्नातकोत्तर द्विवर्षीय पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया है जिसमें हिन्दू धर्म के वैशिष्ट्य और परम्पराओं पर आधारित पाठ्यक्रम की रचना की गई है मुख्य रूप से तत्त्व, प्रमाण विमर्श, वेद परम्परा और शास्त्रों के अर्थ निर्धारण की पद्धति, पाश्चात्य ज्ञान मीमांसा, रामायण, महाभारत, स्थापत्य, लोकवार्ता, नाट्य, कला, भाषा विज्ञान और सैन्य विज्ञान इत्यादि विषयों को शामिल किया गया है।
- प्रथम-पत्र आचार्य के सभी वर्गों के विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाएगा जिससे संस्कृत वाङ्मय की सभी विधाओं के साहित्य से उनका सामान्य परिचय हो सके।
- आचार्य सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में कुल 20 पत्र होंगे जिनका कुल श्रेयांक 96 होगा, जिनका विवरण अधोलिखित हैः-
  - i) मुख्य विषय के 14 पत्र होंगे, जिनमें प्रत्येक पत्र 5 श्रेयांक का होगा।
  - ii) रोजगार परक विषय के 4 पत्र होंगे, जिनमें प्रत्येक पत्र 4 श्रेयांक का होगा।
  - iii) शोध प्रविधि एवं पाण्डुलिपि विज्ञान का 1 पत्र होगा जिसका श्रेयांक 5 होगा।
  - iv) लघु शोध प्रबन्ध, शलाका एवं शास्त्रीय व्याख्यान का 1 पत्र होगा जिसका श्रेयांक 4 होगा।

आन्तरिक परीक्षण/प्रदत्त नियत कार्य (Internal test/Assignment)	-	05
शास्त्र सम्बद्ध संगोष्ठी/शास्त्र परिचर्चा (Shastriya paricharcha(seminar/symposia)	-	05
शिक्षण स्रोत सामग्री का संचयन एवं प्रबन्धन (Learning Resource Maintenance)	-	05
उपस्थिति (Attendance)	-	05

75% = 01 अङ्क,
76% से 80% = 02अङ्क,
81% से 85% = 03 अङ्क,
86% से 90% = 04 अङ्क,
91% से अधिक = 05 अङ्क देय होंगे।

कुल योग – - 20 अङ्क

टिप्पणी :

क) सम्बन्धित विषयाध्यापक को आन्तरिक मूल्याङ्कन की अंक तालिका एवं तत् सम्बन्धी सभी मूल्याङ्कित प्रपत्रों को विभागाध्यक्ष के माध्यम से परीक्षा विभाग में अनिवार्य रूप से जमा करना होगा। जिससे आवश्यकता अनुसार परीक्षा विभाग मूल्याङ्कित प्रपत्रों का पुनर्निरीक्षण और छात्र/अभिभावक के मांगने पर सन्तुष्टि हेतु अवलोकनार्थ प्रस्तुत कर सके। परीक्षा विभाग समग्र प्रपत्रों का यथोचित समय तक रख रखाव परीक्षा मानदण्डों के अनुरूप करेगा।

ख) आचार्य पाठ्यक्रम में प्रवेश के इच्छुक छात्र अपने आवेदन पत्र में विषयों के चयन हेतु प्राथमिकता के क्रम से विषयों का उल्लेख करेंगे ।

सेतु परीक्षा

1. जिस छात्र/छात्रा ने पूर्व में संस्कृत विषय नहीं लिया है वह छात्र/छात्रा शास्त्री कक्षा में प्रवेश ले सकता है। लेकिन उन विद्यार्थियों को सेतु परीक्षा का पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करना अनिवार्य होगा।
2. जिस छात्र/छात्रा के पास संस्कृत नहीं है वह छात्र/छात्रा आचार्य कक्षा में प्रवेश ले सकते हैं । लेकिन उन विद्यार्थियों को सेतु परीक्षा का पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करना होगा।
3. इस सेतु परीक्षा में शास्त्री/आचार्य कक्षा के अभ्यर्थी/छात्र को छः विषयों/पत्रों का षाण्मासिक पाठ्यक्रम का अध्ययन कर परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य होगा।
4. परीक्षा उत्तीर्ण करने वाला छात्र/छात्रा ही शास्त्री/आचार्य के प्रथम सत्रार्द्ध की परीक्षा दे सकेंगे।
5. सेतु पाठ्यक्रम में सामान्य संस्कृत ज्ञान, व्यवहारिक सम्भाषण, संस्कृत साहित्य का ज्ञान, संस्कृत व्याकरण, श्लोकोच्चारण आदि का अध्ययन अनिवार्य होगा।
6. इसमें क्रमशः निम्नलिखित पत्रों का अध्ययन होगा :-
   - क) प्रथम पत्र - व्याकरण
   - ख) द्वितीय पत्र - भाषा-प्रवेश
   - ग) तृतीय पत्र - पद्य साहित्य
   - घ) चतुर्थ पत्र - गीता एवं नाटकम्
   - ङ) पञ्चम पत्र - भाषा कौशल विकास
   - च) षष्ठ पत्र - कथा साहित्यम्
7. सेतु परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र का ही शास्त्री/आचार्य के सत्रार्द्ध परीक्षा का परिणाम घोषित किया जाएगा।
8. परीक्षा में अनुत्तीर्ण विद्यार्थी का नामांकन निरस्त कर दिया जाएगा व अग्रिम परीक्षा में भी बैठने नहीं दिया जाएगा।

डिप्लोमा पाठ्यक्रम

1. योग-प्रमाणपत्रीय
2. ज्योतिष-प्रमाणपत्रीय
3. कर्मकाण्ड-प्रमाणपत्रीय
4. वेद-प्रमाणपत्रीय
5. वास्तु-प्रमाणपत्रीय
6. आयुर्वेद-प्रमाणपत्रीय
7. भाषा-प्रशिक्षण-प्रमाणपत्रीय
8. कर्मकाण्ड/ पौरोहित्य-प्रमाणपत्रीय
9. वैदिकगणित-प्रमाणपत्रीय

विशेष :

1. अंशकालिक-पाठ्यक्रमों में प्रवेश-अर्हता योग्यता के अनुसार वरीयता-सूची के आधार पर साक्षात्कार के माध्यम से किया जाएगा।
2. योग की प्रायोगिक-कक्षाएं प्रातः 6.30 से 9.30 तक होंगी तथा दो दिन सैद्धांतिक-कक्षाएं होंगी ।

3. किसी भी पाठ्यक्रम में प्रवेश-हेतु बाह्य-अभ्यर्थियों एवं विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं से एक समान प्रवेश-शुल्क लिया जाएगा।
4. परीक्षा में सम्मिलित होने हेतु छात्र/छात्रा की प्रायोगिक एवं सैद्धांतिक कक्षा में कम से कम 80% उपस्थिति अनिवार्य होगी।
5. अंशकालिक-पाठ्यक्रमों में प्रविष्ट-छात्रों को विश्वविद्यालय द्वारा अंशकालिक-पाठ्यक्रमों को संचालित करने हेतु समय-समय पर निर्धारित-नियमों का पालन करना अनिवार्य होगा। किसी नियम की अस्पष्टता या नए नियम की आवश्यकता की स्थिति में कुलपति का निर्णय प्रभावी होगा।
6. जिन अंशकालिक-पाठ्यक्रमों में प्रवेश-हेतु आवेदकों की संख्या 10 से कम हो, तो उस पाठ्यक्रम को इस सत्र में संचालित नहीं किया जाएगा ।

9. शोध एवं प्रकाशन विभाग

विश्वविद्यालय में शोध एवं प्रकाशन विभाग स्थापित है । जिसके अन्तर्गत पुस्तक प्रकाशन, शोध पत्रिका आदि का प्रकाशन किया जा रहा है ।

10 राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC)

NCC विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित है जिसमें जिसमें विश्वविद्यालयीय आचार्य सदस्य हैं । म०वा०सं० विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2021 में NCC को प्रस्तावित किया गया । इससे संबंधित कार्य अभी प्रगति पर है ।

11 राष्ट्रीय सेवा योजना NSS

विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना पूर्णतः क्रियाशील है तथा इसके स्वयं सेवक अपने पदाधिकारियों के नेतृत्व में स्वच्छता, शराबबंदी, दहेज उन्मूलन, महिला सशक्तीकरण, पर्यावरण, नागरिक शिक्षा, सामाजिक सद्भाव, मानवाधिकार की सुरक्षा, बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओ, कैशलेश व्यवस्था, ट्रैफिक नियंत्रण, खुले शौच से मुक्ति, एड्स नियंत्रण एवं रक्तदान आदि के लिए जनजागरण अभियान चलाते रहे हैं ।

12 IQAC आन्तरिक गुणवत्ता प्रत्यायन परिषद् Internal Quality Assurance Cell

NAAC के निर्देशानुसार इस विश्वविद्यालय में एक IQAC (**Internal Quality Assurance Cell)** है। इस **Cell** की नियमित बैठकें आयोजित की जाती हैं तथा किए गए कार्यों की समीक्षा की जाती है ।

13 निगरानी परिषद् Vigilance Cell

वर्तमान में इस विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कोई निगरानी परिषद् गठित नहीं है। तत्काल प्रशासनिक स्तर पर ही विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों के कार्यकलापों पर निगरानी रखी जाती है। शीघ्र ही स्वतन्त्र रूप से प्रथमतः विश्वविद्यालय स्तर पर निगरानी कोष्ठ (Vigilance Cell) के गठन की कार्यवाही की जाएगी ।

14 युवा कल्याण विभाग Department of Youth Welfare

अध्यक्ष, छात्र कल्याण कार्यालय में ही युवा कल्याण विभाग कार्यरत है। जिसके अध्यक्ष पदेन अध्यक्ष, छात्र कल्याण होते हैं।

15 क्रीड़ा निदेशालय Directorate of Sports

विश्वविद्यालय के अन्तर्गत क्रीड़ा विभाग स्थापित है जो अध्यक्ष छात्र कल्याण के अधीन संचालित है। विश्वविद्यालय में विगत वर्षों में इस विभाग के द्वारा कबड्डी, वॉलीवॉल, एथलेटिक्स, योग आदि क्रीडाविधाओं का आयोजन किया जाता रहा है। राजभवन के निर्देशानुसार आयोजित एकलव्य एवं तरंग प्रतियोगिताओं में इस विश्वविद्यालय के छात्र भाग लेकर पुरस्कार प्राप्त करते रहे हैं। विश्वविद्यालय में इस विभाग के द्वारा समय–समय पर युवा महोत्सव का भी आयोजन किया जाता है।

16 अन्तर्जालीय प्रकल्प - Web Portal

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय सर्वदा से ही **सर्वे भवन्तु सुखिनः** इस सूत्र को ध्यान में रखते हुए समस्त राष्ट्र कल्याण के लिए कटिबद्ध है।

17 ई पत्रिका – E-Magazine

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा **महर्षि प्रभा मासिक ई-पत्रिका** प्रकाशित की जाती है। जिसमें विश्वविद्यालय के गतिविधियाँ एवं प्रगति विवरण के साथ साथ ज्ञान विज्ञान परक आलेख विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवम् अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं द्वारा प्रकाशित किया जाता है। इसमें विशेष रूप से प्रतियोगिता परीक्षाओं को दृष्टिगत करते हुए छात्र एवं समाज के लिए प्रकाशन किया जाता है।

18 क्रीडा

विश्वविद्यालय में क्रीडा सम्बन्धित व्यवस्थाऐं आरंभ हो चुकी हैं, क्रीडा के उपकरण शीघ्रातिशीघ्र उपलब्ध कराने का प्रयत्न है। इस पर भी विश्वविद्यालय के छात्रों ने अंतर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिताओं में पुरस्कार भी प्राप्त किये हैं।

19 सांस्कृतिक गतिविधियां – Cultural Activities

विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए समय समय पर अनेक सांस्कृतिक ,सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों के आयोजन करवाए जाते हैं।

20 स्वस्थ्य केन्द्र

विश्वविद्यालय में समय-समय पर स्वास्थ्य शिविर लगाये जाते रहे है। कोरोना काल में शिविर लगाकर निशुल्क कोरोना परीक्षण किया गया है। स्वास्थय के संदर्भ में विश्वविद्यालय में कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों का आयोजन होता रहा है।

21 विकास तथा उपलब्धियाँ Developments and Achievements

विकास व उपलब्धियाँ-विश्वविद्यालय का कार्य निरंतर प्रगति पर है ।भवन निर्माण कार्य प्रारम्भ हो चुका है। वर्तमान मे डा०भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय में कक्षाऐं चल रही हैं।

उपलब्धियां- विश्वविद्यालय के विद्यार्थी अनेक महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों मे विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता कर अनेक पारितोषिक भी प्राप्त कर चुके हैं।

प्रमुख कार्य

विश्वविद्यालय अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित प्रमुख कार्यक्रमों और क्रियाकलापों में कार्यरत है:

- स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तरों पर परम्परागत पद्धति से संस्कृत-शिक्षण तथा संस्कृत के विभिन्न क्षेत्रों में विद्यावारिधि (पीएच.डी.) उपाधि हेतु शोध-कार्य का संचालन कर रहा है।
- उभयनिष्ठ अभिरुचि वाली परियोजनाओं के प्रायोजन में अन्य संगठनों से सहयोग करना।
- संस्कृत पुस्तकालय, पाण्डुलिपि संग्रहालय की स्थापना और दुर्लभ पाण्डुलिपियों एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन तथा प्रकाशन करना।
- स्वीकृत निर्धारित पाठ्यक्रम शोध को संतोषजनक रूप से पूर्ण करके निर्धारित परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने वाले छात्र-छात्राओं को उपाधियाँ और डिप्लोमा प्रमाण-पत्र प्रदान करना।
- विजिटरशिप, फेलोशिप, छात्रवृत्तियाँ, पुरस्कार तथा पदकों का संस्थापन एवं योग्य अभ्यर्थियों को प्रदान करना

22-शैक्षणिक कैलेण्डर

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालयः

Schedule of Academic Calendar for UG & PG Courses for the Session 2022-23

FOR UNDER-GRADUATE (FIRST SEMESTER) COURSES

	DURATION
Admissions	01.07.2022 to 05.08.2022
ODD SEMESTER	
Orientation Programme	08.08.2022 to 10.08.2022
1ST Teaching Term	12.08.2022 to 30.09.2022
Vacations Durga Pooja	01.10.2022 to 05.10.2022
2nd Teaching Term	06.10.2022 to 21.10.2022
Vacations (Diwali)	22.10.2022 to 26.10.2022
3nd Teaching Term	27.10.2022 to 10.12.2022
Examinations	12.12.2022 to 04.01.2023

EVEN SEMESTER	
1ST Teaching Term	06.01.2023 to 04.03.2023
Vacations (Holi)	05.03.2023 to 12.03.2023
2nd Teaching Term	13.03.2023 to 06.05.2023
Examinations	08.05.2023 to 02.06.2023
Summer Vacation	03.06.2023 to 30.06.2023

FOR POST- GRADUATE (FIRST SEMESTER) COURSES

	DURATION
Admissions	15.07.2022 to 16.08.2022
ODD SEMESTER	
Orientation Programme	17.08.2022 to 19.08.2022
1ST Teaching Term	20.08.2022 to 30.09.2022
Vacations Durga Pooja	01.10.2022 to 05.10.2022
2nd Teaching Term	06.10.2022 to 21.10.2022
Vacations (Diwali)	22.10.2022 to 26.10.2022
3nd Teaching Term	27.10.2022 to 17.12.2022
Examinations	19.12.2022 to 10.01.2023

EVEN SEMESTER	
1ST Teaching Term	11.01.2023 to 04.03.2023
Vacations (Holi)	05.03.2023 to 12.03.2023
2nd Teaching Term	13.03.2023 to 11.05.2023
Examinations	12.05.2023 to 02.06.2023
Summer Vacation	03.06.2023 to 30.06.2023

***Examinations be completed of each class within 25-30 days and the evaluation of Answer Books, etc. be got done in remaining days and during Vacations.**

Note:

- **The next Academic session 2022-23 will start from 01/08/2023**
- **If the number of Teaching Days falls less than 180 days (90 days in each semester) in the academic session of 2022-23 due to some unforeseen reasons, it would be the responsibilities of each Department Institute/College to make good the loss by arranging extra classes.**
- **Changes, if any cause by Covid-19 Pandemic, directions of UGS/ State Government shall be followed.**

23 छात्रवृत्ति*- Scholarship

विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे छात्रों को छात्रवृत्ति देने का प्रमुख उद्देश्य संस्कृत शिक्षा ग्रहण करने हेतु छात्रों को प्रोत्साहित करना है। हरियाणा सरकार , भारत वर्ष की विभिन्न संस्थाओं के द्वारा एवं सामाजिक सहयोग के द्वारा निर्धारित छात्रवृत्तियों को निर्दिष्ट वरीयता क्रम के अनुसार छात्र -छात्राओं को प्रदान की जाएगी । छात्रवृत्ति की राशि को विश्वविद्यालय द्वारा किसी भी समय कम या अधिक किया जा सकता है।

छात्र-छात्राओं को प्रदेय सुविधाएं

बस सुविधा

- गाँवों से आने वाले छात्र-छात्राओं के लिए हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित हरियाणा रोजवेज की सुविधानुसार बस सुविधा ।
- कैथल बस-स्टैण्ड से विश्वविद्यालय तक छात्राओं के विद्यावाहिनी बस सुविधा लगाई गई है ।

रेलवे रियायती यात्रा की सुविधा

विश्वविद्यालय परिसर में पंजीकृत समस्त छात्रों को पूजावकाश, शीतावकाश एवं ग्रीष्मावकाश के अवसर पर अपने गृहनगर जाने तथा विश्वविद्यालय परिसर वापस आने के लिए रेलवे द्वारा किराये में छूट दी जाती है। ग्रीष्मावकाश में अन्तिम परीक्षा में सम्मिलित छात्रों को केवल घर जाने की सुविधा दी जायेगी। इस सुविधा को प्राप्त करने के लिए छात्र द्वारा आवेदन करने पर कार्यालय द्वारा आवश्यक प्रपत्र निर्गत किये जाते हैं। यात्रा आरम्भ से एक सप्ताह पहले आवेदन पत्र कार्यालय में प्रस्तुत करना होगा। अवधेय है कि रेलवे के नियमानुसार यह छूट केवल 25 वर्ष से कम आयु वाले छात्रों को ही उपलब्ध है किन्तु शोध-छात्र के लिए अवकाश अथवा गृहनगर का बन्धन नहीं है। वे अपने शोध-निर्देशक की संस्तुति पर शोध कार्य करने के लिए किसी भी समय भारत के किसी भी नगर की रेलवे छूट पर यात्रा कर सकते हैं।

24 पुस्तकालय Library

विश्वविद्यालय में सुसमृद्ध तथा विशाल ग्रन्थालय की सुविधा विद्यमान है। इनमें प्राच्य विद्या तथा संस्कृत शास्त्रों के दुर्लभ ग्रन्थ उपलब्ध हैं। नियमित रूप से शोध-पत्र तथा पत्रिकाएँ भी आती रहती हैं।

विश्वविद्यालय के सभी विभागों को निर्धारित पुस्तकालय नियमों का पालन करना होगा जिन्हें सभी विभाग अपने-अपने पुस्तकालय में प्रदर्शित करेंगे, यदि उनके विभाग में पृथक् विभागीय पुस्तकालय होगा।

25 प्रयोगशाला सुविधा

विश्वविद्यालय में प्रयोगशाला की सुविधा है। प्रमुख रूप से कम्प्यूटर प्रयोगशाला, मनोविज्ञान प्रयोगशाला, शैक्षणिक तकनीकी प्रयोगशाला तथा भाषा शिक्षण प्रयोगशाला इत्यादि प्रयोगशालाएँ उपलब्ध हैं। विश्वविद्यालय के सभी विभागों को निर्धारित प्रयोगशाला नियमों का पालन करना होगा जिन्हें सभी विभाग अपने-अपने प्रयोगशाला में प्रदर्शित करेंगे, यदि पृथक् प्रयोगशाला है तो।

26 छात्रावास – Hostel

विश्वविद्यालय द्वारा छात्र व छात्राओं के लिए छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है।

27 संस्कृत सम्भाषण एवं लेखन Sanskrit Speaking and Writing

संभाषण कक्षा-प्रत्येक सत्र प्रारम्भ होने से पहले विश्वविद्यालय द्वारा संस्कृत संभाषण कक्षाओं का आयोजन किया जाता है। जिससे विषय प्रवेश मे विद्यार्थियों को सरलता हो सके।

28. प्रशासनिक अधिकारी एवं विभागाध्यक्ष

प्रशासनिक अधिकारी

1.	प्रो. रमेशचन्द्र भारद्वाज	कुलपति
2.	----------	कुलसचिव , अधिष्ठाता महाविद्यालय (अतिरिक्त प्रभार)
3.	डॉ. रवि भूषण गर्ग	उपकुलसचिव
4.	डॉ. जगत नारायण कौशिक	अधिष्ठाता छात्र कल्याण एवं कुलानुशासक
5.	डॉ. सुरेन्द्र पाल वत्स	परीक्षा नियन्त्रक
6.	डॉ. शशिकान्त तिवारी	युवा कल्याण एवं जन सम्पर्क अधिकारी
7.	डॉ.अखिलेश कुमार मिश्र	पुस्तकालय प्रभारी
8.	श्री सुशील काजला	वित्त अधिकारी
9.	श्री दर्शन कौशिक	अधीक्षक (प्रशासन)
10.	श्री सुभाष चन्द	अधीक्षक (परीक्षा एवं शैक्षणिक)

विभागाध्यक्ष

	नाम	विभाग
1.	डॉ. जगत नारायण कौशिक	साहित्य
2.	डॉ. सुरेन्द्र पाल वत्स	व्याकरण
3.	डॉ. रामानन्द मिश्र	योग
4.	डॉ. शशिकान्त तिवारी	दर्शन
5.	डॉ.नरेश शर्मा	ज्यौतिष
6.	डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र	वेद
7.	डॉ. कृष्णचन्द्रपाण्डेय	हिन्दू अध्ययन
8.	डॉ. शर्मिला	धर्मशास्त्र